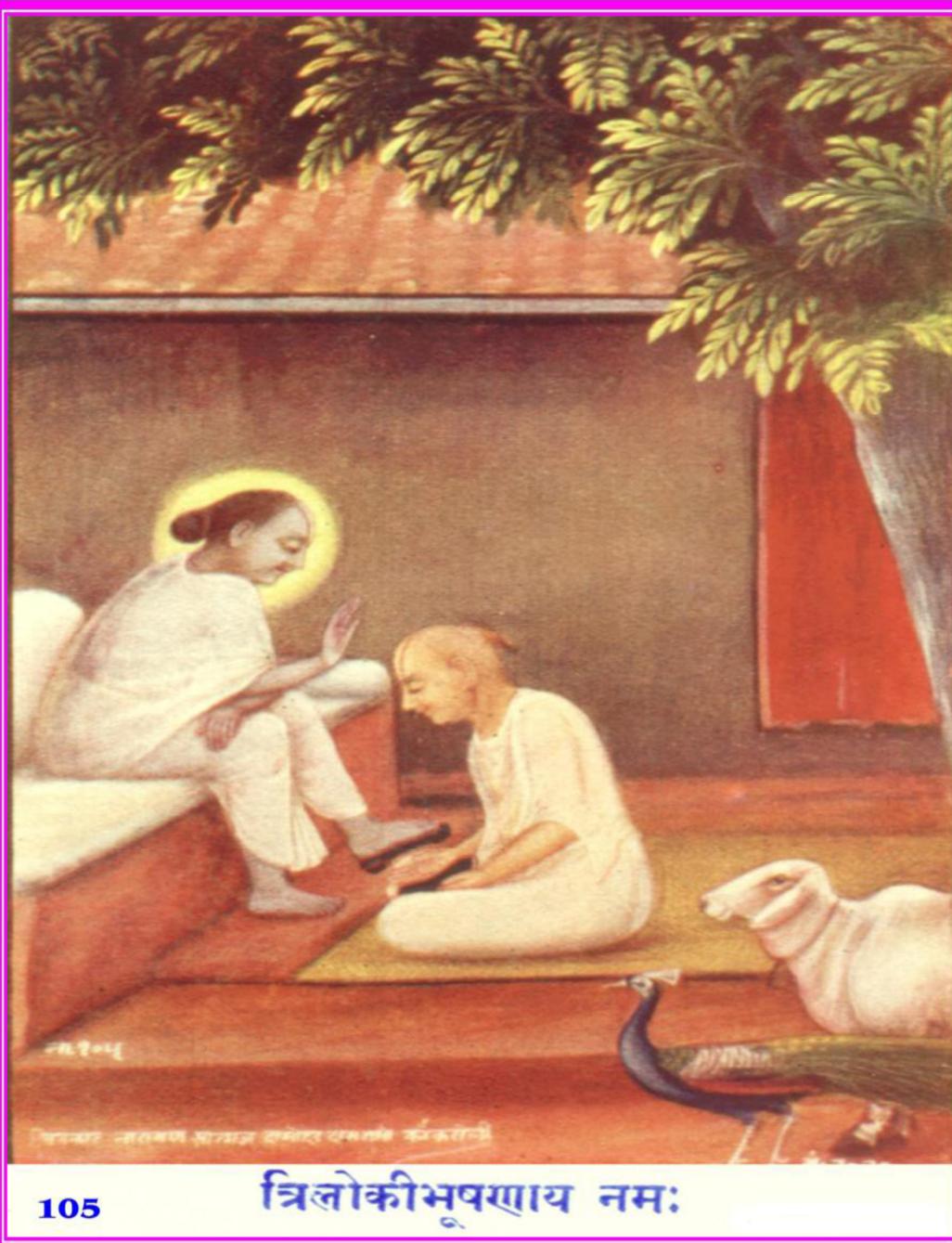




## आंतरराष्ट्रीय पुस्तिमार्गीय पैषाच परिषद्



105

त्रिलोकीभूषणाय नमः

## १०५ - त्रिलोकीभूषणम्

श्रीआचार्यशु त्रायेय लोकना भूषणस्वरूप छे.

### अर्थ - यरित्र - संगति :

श्रीआचार्यशु त्रिलोकी अर्थात् सतोगुण, तमोगुणवाणा अथवा कर्मभार्गीय ज्ञानभार्गीय अने भक्तिभार्गीय सेवकोना भूषण स्वरूप छे. “भक्तायारोपदेष्टा य कर्म भार्ग प्रवर्त्ताङ्कः” थी कर्मभार्गना भूषणस्वरूप “श्रीकृष्णज्ञानदोगुणः” थी ज्ञानभार्गना भूषणस्वरूप अने “भक्तिभार्गार्जलार्त्तद” थी भक्तिभार्गना भूषणस्वरूप छे. “वस्तुत इष्टु” ना स्वरूपे “दिविभुवियरसायां डाः स्त्रियस्तद्दुरापाः” (धर्मरात्रि) त्राये लोकना भूषण छे.

श्रीआचार्यशु गुणभय सेवकोने आपश्री हास्यद्वारा आकर्षित छे. भाद भंट हास्यथी आ सेवकज्ञोनो भोह दूर करी चिर विप्रयोगात्मक लीलारसनुं दान करे छे. आपनुं स्वरूप द्विलात्मक संयोग विप्रयोग उभयद्विलात्मक होवाथी आ त्रायेय गुणवाणा सेवकोने पोताना संपूर्ण स्वरूपानंदनुं दान करे छे. आ प्रकारे आपश्री त्रिलोकीना भूषण छे.

आ नाम “यश-धर्म” सूचक छे.

### यित्र - परिचयः

अडेलमां श्रीआचार्यशु दमोदरदास हरसानीने पोतानी चरण पादेका पदरावी आपे छे.

### नाम - संगति :

सेवको सिवाय चरणरूपी आपश्रीसे जीजा डोना भाग्यनो उद्य छर्यो ते जग्नाववा भूमिभाग्य नाम कहे छे.